प्रिय छात्र / छात्रा,

समावेशी शिक्षा भाग- 4 "निःशक्तता की संकल्पना एवं वर्गीकरण" के अंतर्गत विशिष्ट बालक का अर्थ, विशेषताएं, धनात्मक व ऋणात्मक विचलन, आई.सी.आई.डी.एच.माडल, आई.सी.एफ. माडल, निशक्तता का वर्गीकरण एवं प्रतिभाशाली बालक से सम्बंधित महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की गयी है जो अवश्य ही आप सब के लिए उपयोगी साबित होगी। साथ ही यह भी बताना अवश्यक है कि निशक्तता का वर्गीकरण में नि:शक्तता वाले बच्चे एवं प्रतिभाशाली बच्चे अन्य बिन्दुओं की तुलना में विस्तृत है अत: वर्गीकरण के आधार पर एक-एक कर इनकी विस्तृत चर्चा अगले भागों में की जाएगी।

प्रस्तुत सामग्री में मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं अत: आप सब से अनुरोध है की त्रुटियों से मुझे अवगत कराते हुए उपयोगी पाठ्य-सामग्री से लाभन्वित हों।

धन्यवाद....!

-आभा द्विवेदी
मो०- 8577098888

निःशक्तता की संकल्पना एवं वर्गीकरण

❶ विशिष्ट बालक का अर्थ :

प्रत्येक बालक अपने आप में विशिष्ट होता है फिर भी जब हम विशिष्ट बालक शब्द से मुखातिब होते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसा बालक जो बालकों के सामान्य समूह से अलग, कुछ विशिष्टता रखता हो उसके बारे में बात की जा रही है।

विशिष्ट बालक की ये विशेषताएं सोचने, समझने, सीखने, समायोजन करने आदि की योग्यताएं हो सकती हैं जिसमें बालक भिन्न हो सकता है। इन भिन्नताओं के आधार पर विशिष्ट बालकों को कई समूहों एवं उप समूहों में वर्गीकृत किया जाता है। जैसे- बुद्धि के आधार पर प्रतिभाशाली या मंदबुद्धि बालक, शारीरिक क्षमता के आधार पर चलन क्रिया अक्षमता, दृष्टिबाधा, श्रवण ह्रास, वाणी दोष वाले बालक, सामाजिक दृष्टि से कुसमायोजित अथवा समस्यात्मक बालक आदि।

चूँकि इन सभी वर्गों से संबंधित बालकों की प्रकृति भिन्न होती है इसलिए उनके लिए विशिष्ट प्रकार की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है।

❷ विशिष्ट बालक की विशेषताएं:

विशिष्ट बालक व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों जैसे- शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और नैतिक आदि सभी में व्यक्तित्व गुणों के आधार पर सामान्य से बहुत अधिक आगे बढ़े हुए या पिछड़े हुए होते हैं।

विशिष्ट बालकों की प्रकृति और विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं में प्रदर्शित किया जा सकता है-

- विशिष्ट बालक, सामान्य या औसत बालकों से निश्चित रूप से काफी अधिक अलग एवं भिन्न होते हैं।
- सामान्य या औसत बालकों से विशिष्ट बालकों की यह भिन्नता या विशेष दूरी विकास की दोनों दिशाओं धनात्मक और ऋणात्मक में से किसी भी एक ओर हो सकती है। उदाहरण के लिए वे बुद्धि की दृष्टि से जहां जरूरत से अधिक धनी हो सकते हैं वहीं बुद्धि की बहुत कमी भी उन्हें मानसिक रूप से पिछड़े बालकों के रूप में विशिष्ट बालकों का दर्जा दिला सकती है।
- सामान्य या औसत बालकों से विशिष्ट बालकों की भिन्नता या विशेष दूरी इस सीमा तक बढ़ी हुई होती है कि इसकी वजह से उन्हें अपने और अपने वातावरण से समायोजित होने से विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ता है और अपनी विशिष्ट योग्यता और क्षमताओं के विकास, उचित समायोजन तथा आवश्यक वृद्धि एवं विकास हेतु विशेष देख-रेख एवं शिक्षा-दीक्षा की आवश्यकता पड़ती है।

❸ धनात्मक व ऋणात्मक विचलन:

विचलन का तात्पर्य बिखराव से है, फैलाव से है। विचलन यह बताता है कि कोई भी प्राप्तांक केन्द्रीय मान से कितना दूर तथा कितना समीप है। जब हम किसी विशेष गुण को धारण करने वाले समूह के गुण का मापन करते हैं तो प्राप्त आंकड़ो का अलेखनीय निरूपण घंटी के आकार का आता है। जिसे हम सामान्य प्रायिकता वक्र कहते हैं।

केन्द्रीय मान के दायें के प्राप्तांक केन्द्रीय मान से अधिक होते हैं तथा इनका विचलन धनात्मक होता है। इसी प्रकार केन्द्रीय मान के बाएं के प्राप्तांक केन्द्रीय मान से कम होते हैं तथा इनका विचलन ऋणात्मक होता है।

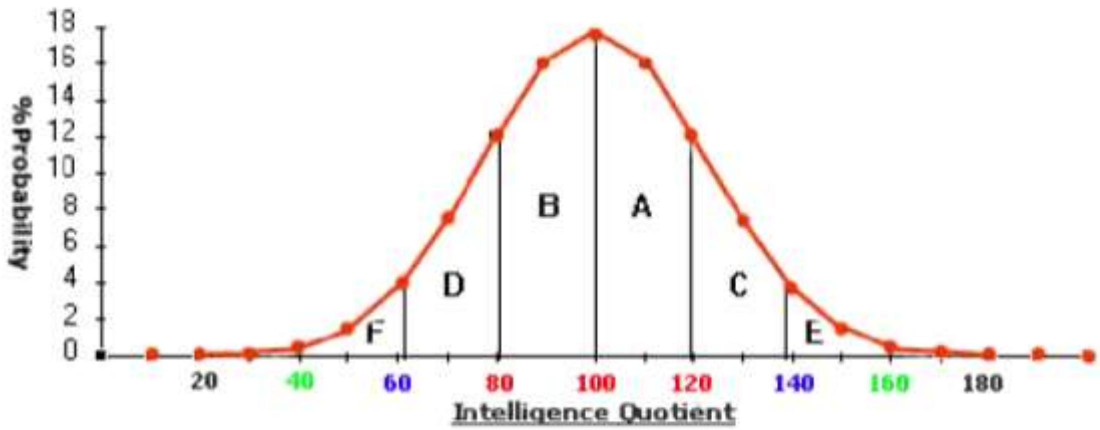

विद्यालय में सफल अधिगम या कहीं भी सफल अनुकूलन हेतु कुल सात महत्वपूर्ण आयाम है जो कि निम्नलिखित हैं-

1. दृष्टि
2. श्रवण
3. गति
4. संप्रेषण
5. प्रत्यक्षण-गामक
6. सामाजिक-सांवेगिक
7. बुद्धि

एक विशिष्ट बालक इनमें से एक या अधिक आयामों में धनात्मक या ऋणात्मक किसी भी दिशा में विचलित हो सकता है।

- **धनात्मक विचलन वाले बालक-**

धनात्मक विचलन से तात्पर्य है कि उपर्युक्त वर्णित सभी सातों आयामों में किसी एक या एक से अधिक आयामों में केंद्रीय/औसत मान से इतना अधिक धनात्मक दिशा में विचलित हो कि बालक के अनुकूलन में या सामाजिक-सांवेगिक विकास में कोई विशेष बाधा ना आए तथा बालक का प्रदर्शन सामान्य से उत्तम हो।

ऐसे बालकों को भी सामान्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से उतना लाभ नहीं मिलता। इनका अधिगम-दर अधिक होने के कारण बालक सामान्य-शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से लाभ प्राप्त नहीं कर पाता है। इनके शिक्षण-अधिगम हेतु विशेष कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है। ऐसे बालकों के साथ भी समायोजन संबंधी समस्याएं पाई जाती हैं। ऐसे बालकों को अपनी विशिष्टता के क्षेत्र में उपलब्धि अधिक होने के कारण कभी-कभी आत्मसम्मान की अधिकता पाई जाती है।

ऐसे बालकों की श्रेणी में मुख्यतः निम्नलिखित प्रकार के बालक आते हैं-

  - प्रतिभावान बालक
  - सृजनशील बालक

- **ऋणात्मक विचलन वाले बालक-**

ऋणात्मक विचलन से यह तात्पर्य है कि बालक उपर्युक्त वर्णित सभी सातों आयामों में से किसी एक या एक से अधिक आयामों में केंद्रीय/औसत मान से इतना अधिक ऋणात्मक दिशा में विचलित हो कि बालक का अनुकूलन या सामाजिक-सांवेगिक विकास बाधित हो जाए तथा बालक का प्रदर्शन सामान्य से कम हो।

ऐसे बालकों को भी सामान्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से उतना लाभ नहीं मिलता। ऐसे बालक के साथ भी समायोजन संबंधी समस्याएं पाई जाती हैं। ऐसे बालकों के शिक्षण अधिगम हेतु विशिष्ट कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है।

जबकि आजकल सभी बच्चों को एक साथ शिक्षा प्रदान करने का प्रतिमान प्रचलन में बढ रहा है। जिसे समावेशी शिक्षा के नाम से जाना जाता है। इस शिक्षा व्यवस्था में बालक की क्षति को सहायक यंत्रों तथा प्रविधियों की सहायता से समाप्त कर दी जाती है या कम कर दी जाती है जिससे बालक सामान्य कक्षा व्यवस्था से लाभान्वित होने लगता है। ऐसे बालकों की श्रेणी में मुख्यत: निम्नलिखित प्रकार के बालक आते हैं-

- दृष्टिबाधित बालक
- श्रवण ह्रास वाले बालक
- मानसिक मंद बालक
- अपराधी बालक
- समस्यात्मक बालक
- पिछ्ड़े बालक
- मंद अधिगमित बालक
- स्वलीन बालक
- चलन क्रिया बाधित बालक

❹ नि:शक्तता की संकल्पना:

- **आई.सी.आई.डी.एच.-**

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 1980 में क्षति, अक्षमता तथा नि:शक्तता का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण- आई.सी.आई.डी.एच. (इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ इंपेयरमेंट्स, डिसेबिलिटी एंड हैंडीकैप्स- नामक मैनुअल प्रकाशित किया। इसका उपयोग नियमित स्वास्थ्य के आंकड़ों से लेकर

स्वास्थ्य सेवा योजना, सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक प्रशासन और सामाजिक नीति के अनुप्रयोगों तक विस्तारित है।

इस मैनुअल में बीमारी के परिणामस्वरूप उत्पन्न में तीन भिन्न और स्वतंत्र वर्गीकरण को शामिल किया गया है। आई.सी.आई.डी.एच. ने वर्गीकरण का आधार निम्न रेखीय प्रगमन को माना गया और इसलिए आई.सी.आई.डी.एच. को मेडिकल मॉडल पर आधारित वर्गीकरण भी माना जाता है।

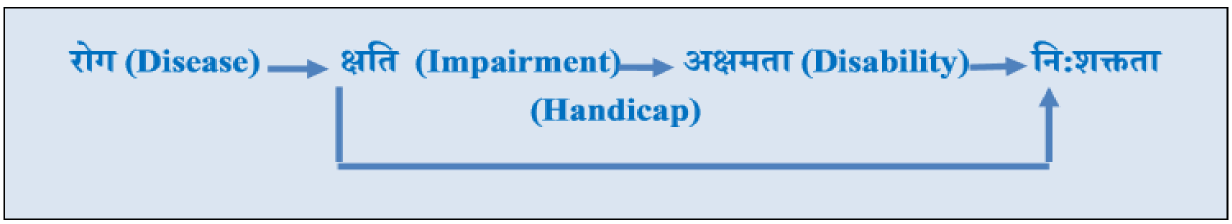

- **क्षति (इंपेयरमेंट)-**

"स्वास्थ्य अनुभव के संदर्भ में, क्षति शारीरिक, मनोवैज्ञानिक या संरचनात्मक कार्य अथवा संरचना से संबंधित विषमता या हानि है।"

डब्ल्यू.एच.ओ-आई.सी.आई.डी.एच.,1980

- **अक्षमता (डिसेबिलिटी)-**

"स्वास्थ्य अनुभव के संदर्भ में, व्यक्ति के लिए सामान्य माने जाने वाले क्रियाओं की श्रेणी में सामान्य रूप से गतिविधि प्रदर्शन करने की क्षमता में बाधा या कमी (जो क्षति से उत्पन्न हुई है) अक्षमता है।"

डब्ल्यू.एच.ओ-आई.सी.आई.डी.एच., 1980

- **नि:शक्तता (हैंडीकैप)-**

  "स्वास्थ्य अनुभव के संदर्भ में, एक व्यक्ति के लिए निःशक्तता, क्षति या अक्षमता से उत्पन्न सीमा के रूप में है जो उस व्यक्ति विशेष एक सामान्य भूमिका (उम्र, लिंग, और सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों के अनुरूप) की पूर्ति होने में बाधा लाता है या रोकता है।"

डब्ल्यू.एच.ओ-आई.सी.आई.डी.एच., 1980

रोग एक आंतरिक स्थिति (विषमता/हानि) को सूचित करता है, क्षति आंतरिक स्थिति के बाह्य-प्रदर्शित होने से संबंधित है, अक्षमता हानि के वस्तुनिष्ठिकारण से संबंधित है जबकि निःशक्तता हानि के समाज मूलक संबंधों को इंगित करता है।

बाद में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने माना कि इस रेखीय संरचना को विकलांगता के वर्गीकरण का सटीक आधार नहीं माना जा सकता है। फलस्वरूप कई सुधार प्रस्तावित किए गए और नवीन संस्करण (आई.सी.एफ.) में संशोधित मॉडल को अपनाया गया।

- **आई.सी.एफ.:**

  क्रियात्मकता, विकलांगता तथा स्वास्थ्य के अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ फंक्शनिंग, डिसेबिलिटी एंड हेल्थ) जो सामान्यतः आई.सी.एफ. के नाम से जाना जाता है और स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों हेतु मानक भाषा और रूपरेखा का विवरण प्रदान करता है। यह वर्गीकरण विकलांगता पर केंद्रित न होकर स्वास्थ्य और क्रियात्मकता पर केंद्रित है।

- **आई.सी.एफ. के मॉडल:**

निम्न आरेख आई.सी.एफ. के लिए आधार है तथा यह विकलांगता के 'बायोसाइकोसोशल' मॉडल का एक प्रतिनिधित्व है-

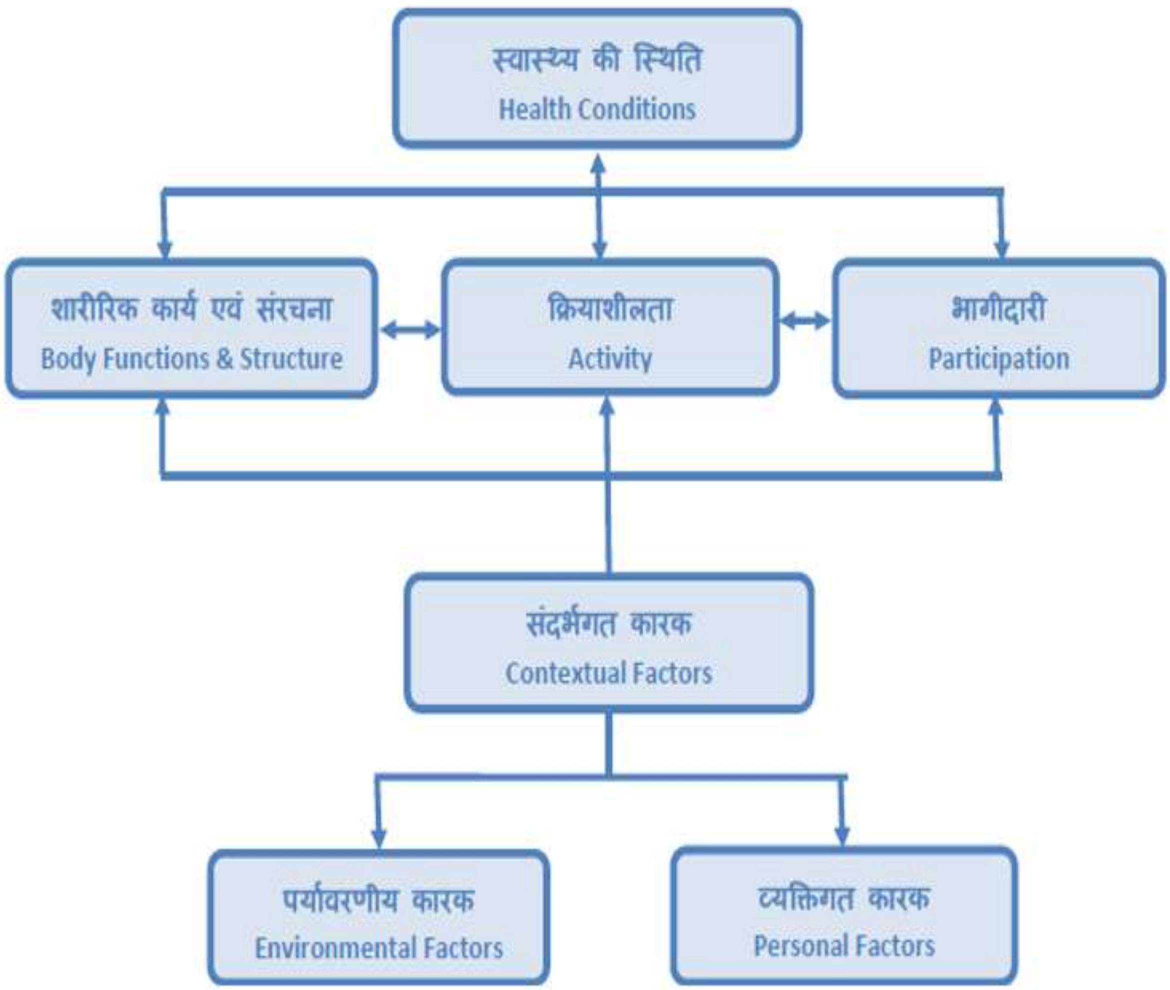

- **आई.सी.एफ. का अनुप्रयोग-**

आई.सी.एफ. नीति निर्धारण, आर्थिक आकलन, शोध कार्य, वातावरण निर्माण, सटीक हस्तक्षेप आदि कई क्षेत्रों में किया जा सकता है इसके अनुप्रयोग को निम्न चार्ट द्वारा बेहतर ढंग से समझ सकते हैं-

व्यक्तिगत स्तर पर	संसथान स्तर पर	समाज स्तर पर
• व्यक्ति के क्रियात्मकता के आकलन में. • व्यक्ति के उपचार की योजना में. • हस्तक्षेप तथा उपचार के आकलन में. • मेडिकल प्रोफेशनल के मध्य सटीक सम्प्रेषण स्थापित करने में. • लाभार्थी के स्व-मूल्यांकन में.	• शिक्षण तथा प्रशिक्षण के लिए • संसाधन के योजना तथा विकास में. • सेवा के गुणवत्ता सुधारने में. • प्रबंधन तथा परिणाम के मूल्यांकन में • स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने हेतु प्रभावी मॉडल के विकास में.	• सामाजिक न्याय सम्बन्धी योजनाओं के लिए पात्रता निर्धारण में. • सामाजिक नीतियों के विकास तथा पुनरीक्षण में. • आवश्यकता आकलन में- जिससे नीतियाँ निर्धारित हों. • यूनिवर्सल डिजाइन या सुगम वातावरण के आकलन में.

- **आई.सी.एफ. के सिद्धांत-**

निम्नलिखित सिद्धांत इस मॉडल के आवश्यक घटक हैं और यह संशोधन की प्रक्रिया निर्देशित करती है-

- **सार्वभौमता-**

स्वास्थ्य की स्थिति पर ध्यान दिए बिना, क्रियात्मकता और निःशक्तता का वर्गीकरण सभी लोगों पर लागू होना चाहिए। इसलिए आई.सी.एफ. सभी लोगों के बारे में है। यह हर किसी के क्रियात्मकता का सवाल है। अतः इसे निःशक्त व्यक्तियों को एक अलग समूह के रूप में लेबलिंग करने वाला एक उपकरण नहीं बनाने देना चाहिए।

- **समानता-**

  प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, क्रियात्मकता और निःशक्तता के वर्गीकरण को केवल संरचना आधारित स्वास्थ्य स्थितियों में अंतर (जैसे- मानसिक और शारीरिक) नहीं करना चाहिए। दूसरे शब्दों में निःशक्तता में एटियलजि आधारित भेदभाव नहीं होना चाहिए।

- **निष्पक्षता-**

  जहां तक संभव हो क्रियात्मकता और निःशक्तता के वर्गीकरण में निष्पक्ष भाषा का प्रयोग होना चाहिए। यानी प्रत्येक ज्ञान-क्षेत्र के पहलुओं को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों पर अभिव्यक्ति करना चाहिए।

- **पर्यावरणीय कारक-**

  नि:शक्तता के सामाजिक माडल को पूरा करने के क्रम में, आई.सी.एफ. में संदर्भगत कारकों को सूचीबद्ध किया गया है, जिसमें पर्यावरणीय कारक भी शामिल हैं। इनमें भौतिक कारक (जैसे- जलवायु और इलाका) से लेकर सामाजिक अभिवृति, संस्थान तथा नीतियाँ शामिल हैं।

❺ निःशक्तता की संकल्पना एवं वर्गीकरण-

एक विद्यार्थी शिक्षक के रूप में समावेशित शिक्षा का क्रियान्वयन करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि सर्वप्रथम हम नि:शक्त बच्चे जैसे- संवेदी एवं वाक नि:शक्त बच्चे, तंत्रिका विकासात्मक नि:शक्त बच्चे एवं गत्यात्मक निःशक्त, बहुनिःशक्त तथा अन्य निःशक्त बच्चों के साथ प्रतिभाशाली बच्चे एवं सृजनशील बच्चे के बारे में जाने।

- **संवेदी एवं वाक निःशक्तता के अन्तर्यगत-**

  दृश्य, श्रवण एवं वाक निःशक्तता।

- **तंत्रिका विकासात्मक नि:शक्तता के अन्तर्यगत-**

  बौद्धिक निःशक्तता (पूर्व में मानसिक मंदता), विशिष्ट अधिगम निःशक्तता, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार।

- **गत्यात्मक निःशक्तता, बहु:निशाक्तता तथा अन्य निःशक्तता के अन्तर्यगत-**

  गत्यात्मक निःशक्तता- (अस्थिपेशिय, जन्मजात कुसंरचना, दुर्घटना तथा अन्य दीर्घकालिक बीमारी जैसे पोलियो, बालवक्र, मेरुदण्ड दिशाखन, नितम्ब तथा अवयवों की जन्मजात कुसंरचना, मेरुदण्ड की विषमता, पेशीय दुर्विकास तथा अंगविच्छेद)।

  बहु:निशाक्तता- (वाणी,शारीरिक गतिशीलता, बौद्धिक, दृश्य, श्रवण, मस्तिष्क आघात तथा अन्य संभावित निःशक्तता)।

  अन्य निःशक्तता- (एसिड हमले के शिकार, दीर्घकालिक स्नायविक स्थिति, बौनापन, हीमोफीलिया, कुष्ठ उपचारित व्यक्ति, मानसिक रुग्णता, मल्टीपल स्केलेरोसिस, पार्किसन रोग, सिकल सेल रोग)।

अतः अब हम इन सभी निःशक्तताओं, इनकी प्रकृति, आवश्यकताओं, आंकलन, हस्तक्षेप तथा शिक्षण रणनीतियों पर चर्चा करेंगे।

संदर्भ:

- समावेशी शिक्षा का सृजन- डी.पी.मिश्र, मदन सिंह
- एजुकेशन ऑफ एक्सेप्शनल चिल्ड्रन- पांडा के.सी.
- फाउंडेशन कोर्स ऑन एजुकेशन ऑफ चिल्ड्रन विद डिसेबिलिटीज- इग्नू
- इंक्लूसिव एजुकेशन- यूओयू